

मतिः श्रेयः ॥ ३॥ उव कु तिला वनं । सु सन्ना तु व तुभ
नित्यं । बलं दाता दिना यक ॥ ४॥ द वी वृ शा म हा न हा
महावल य ना कु म ॥ ५॥ म हा द ने म हा का य । न क द
न ग जान न ॥ ६॥ म व र्णु म हा दा य । मि न र्णु म ल न
य र्क ॥ ७॥ क माला स्र द न र्णु च । द कि ॥ ८॥ क च र्णु सि
॥ ९॥ म हा ग ल य ति न भा सु म ॥ १०॥ न म ॥ ११॥ वा य ॥

20541

महाभारत

ॐ नमः शिवाय न वासु द वाय ॥ विष्णुं ॐ न कं दि
व्यं सर्वदं सै निवाले नं ॥ उग्र न जं म हा वीर्यं सर्वं
पु नि कृ न तं ॥ १ ॥ विष्णु न न्दं मी नं नु ॥ उग्र ना ॥
ॐ नं नं नं द हं सं यु व का मि ॥ आत्म न का स दा रु व न
॥ २ ॥ या यो च कं रु ॥ म वि न्दं उ ग्र था ॥ मु रि वि क म ॥ उ
ग्र थि कं स वी न दं ॥ क थो च व उ ना द नं ॥ ३ ॥ ना रु

ॐ नं नं नं द हं सं यु व का मि ॥ आत्म न का स दा रु व न
॥ २ ॥ या यो च कं रु ॥ म वि न्दं उ ग्र था ॥ मु रि वि क म ॥ उ
ग्र थि कं स वी न दं ॥ क थो च व उ ना द नं ॥ ३ ॥ ना रु
ॐ नं नं नं द हं सं यु व का मि ॥ आत्म न का स दा रु व न
॥ २ ॥ या यो च कं रु ॥ म वि न्दं उ ग्र था ॥ मु रि वि क म ॥ उ
ग्र थि कं स वी न दं ॥ क थो च व उ ना द नं ॥ ३ ॥ ना रु

यजमु न द सि ॥ १ ॥ शिवस्य सर्वगतं च न दमयन्
 धातुमशयुर्वेष्यन् दनी का दं माघया धावन् सथा ॥ ८ ॥ दक्षिणे
 नले सिंहे मुने मृणां गुदमाद न ॥ यन् धातुमवा नृणां वायु र्या
 यी न वा स तं ॥ गजे धनमु को व र्यं संवृ मा सा न ता दि सि न या
 ताल वृ ग न क आ का ग वृ शु द न ॥ १० ॥ सर्व गत वृ
 षु विष्ठा विष्णु य षु न वि षु य षु न य विष्ठा विचित्र
 कार सत्रिषु

सिमहीतल ॥ ११ ॥ ग्राउ दान यथे ध्याय संश्राम गतु
 सं कट न दायु न न ल चेत वा यु चो न रु ये स थ ॥ १२ ॥
 अग्नि द न्न निया न वृ रु न गृ ह विना ग न न ॥ अ कि लि
 रु न य न वृ रु ये ना सि क दा च न ॥ १३ ॥ न क नृ क
 महा दे व न क न क म ह स्व न न क नु सर्व दे वा
 वा वृ क विष्णु म ह स्व न ॥ १४ ॥ दि वा न क नु स्व था ह मा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सदेव त्रयं कृता विष्णुः सर्व
स्मर्तुं चतुर्भुजः ॥ १५ ॥ जलत्रयं कृत्वा त्रादः कृतं
त्रयं कृत्वा मनः ॥ अतर्क्यो नाने सिद्धस्तु सर्वं गुणानुके शिवः
॥ १६ ॥ कवचं वासुदेव ॥ यो यथानि सुनिश्चयं नर
यं नयदा निश्च ॥ सर्वव्याधिनिवात्रणं ॥ १७ ॥ विद्याधिलर
नं विद्यां धनार्थं लरण धनं कन्यार्थं लरण कन्या भाग

र्थं लरण गतिं ॥ १८ ॥ अथ लरण यथा नराथं लरण
क्रियं ॥ कामार्थं लरण कामान यथा ॥ सोराय कर्हिद ॥
२॥ सर्वेया यविनिर्मकं विष्णुला कं सगकृति ॥ अथ गान
नू ॥ गविन्दं नामाश्वात्रण रवयं ॥ २० ॥ नम्यं निग कला
गच्छ सत्यसत्यं वदाम् ॥ आदिशा दृष्टानि विष्णु दन्दया
निमलेश्वरं ॥ २१ ॥ यश्च तानिमलनिर्यं सर्वव्याधिनिवात्र

दत्तखण्ड धात्री नृती नृती च द्वि नृती । नृदधुवि
 षु धसदानमस्तु ॥ ५ ॥ नृमूढमाला वनमो किमाला
 उमा प्रिय साग नृता प्रिय धु पापानि धे त्या निहना
 रु निधु नृदधुवि षु धसदानमस्तु ॥ ६ ॥ हस्मांगलया
 वन (माय नयी य रू ध ना यरू विदान नी था सं ध
 दंरु माला उमद गियू नृ नृदधु विषु धसदानमस्तु ॥ ७ ॥
 संहार नृती

मृग स्व नृती वनमि नृती विर्गि ग नृती नच सिंदरु
 पतिव स्व नृती वन विषु नृती नृदधुवि षु धसदानम
 स्तु ॥ ८ ॥ उक्ता स्व नृती नृयति स्व नृती वक्ति स्व नृती जल
 वायु नृती उक्ता गिन नृती दन ना द्धु नृती नृदधु वि षु ध
 सदानमस्तु ॥ ९ ॥ धी चंद धात्री वसूव धा धिकात्री क
 ससुमा धा गीयू नृधु मा धा कामांगना गा दगा गा वना गा
 १०३ १०२

बुद्धविष्णुसदानमस्तु ॥ १० ॥ श्री कृष्णनागायनं सामनागा
उं काचं नृयावनयागनृयाः ॥ ११ ॥ श्री नृयानृयावनृयाः ॥ १२ ॥
बुद्धविष्णुसदानमस्तु ॥ ११ ॥ श्री आदिना ॥ १२ ॥ वनमीनना
॥ १३ ॥ श्री वक्त्रे विक्रा वनमीन विक्रा ॥ १४ ॥ श्री विष्णुना ॥ १५ ॥ वनमि
नृना ॥ १६ ॥ बुद्धविष्णुसदानमस्तु ॥ १७ ॥ यत्र बुद्ध विः
श्रुतगतीवकालाय ॥ १८ ॥ किं निर्यसु समाहित न नृय

ति प्रागांकलूखादिसर्वविथागद ॥ १९ ॥ खं सु समाहित
न ॥ २० ॥ ॐ तिह निरु नृय व ॥ २१ ॥ समाय ॥ २२ ॥

ॐ नमो नारायणाय ॥ यात्रय नृय गलयन गंधधूय
निवासनं ॥ २३ ॥ नृययसं ॥ २४ ॥ निद्यान ॥ २५ ॥
दासदासियत्र ॥ २६ ॥ दितसुवदूक ॥ २७ ॥ विह ॥ २८ ॥
निर्मूसिका सुक्किन ॥ २९ ॥ श्री वा नमस्तु ॥ ३० ॥

धूप्रियसुत्रमासिनिमारुनविरुचकलमत्यनीनिप्रियसुत्रनःकण
लावागियसुत्रयुगयथाधनं जसुत्रगंजनवियवदनरुकसुत्रनकात्र
नं जधनचुवनदुत्रिरुवठन॥ श्रीवात्रमलुगसुंदरी॥ २॥ मोविधुनिकन
सकनसुगनेमाहिताकाननयुत्रं चन॥ ०॥ म० म० चतनमूनिचनकं विना
सर्वदुर्जनरुसतकहकथे सनहनदुर्जनमिवातिर्न विनहददु
वदुनिमाविसदुसदु॥ श्रीवात्रमलुगसुंदरी॥ ३॥ चित्तुमनमाहाउदि
नदिनकचयकठगदसुत्रमनाहनं कनक कलजलवन्दनउहउहदेत्यदवि
महावनी जग्निथपथनसदुगमिप्रियकयमानमायलुधुर्गद्वारिहदेष

धनधनीश्रीवात्रमलुगसुंदरी॥ ४॥ कृष्णथरुनदेत्यदमिकधर्हि
रात्रनिवात्रनं र्यगगस्यरुनदवसुत्रनत्रवात्रवात्रविवात्रनं रव
प्रगकिनाकनरुनगवनवनयस्यकिर्हि विवदुर्न सागसे
त्राणायुद्रमिधनधन॥ श्रीवात्रमलुगसुंदरी॥ ५॥ कनक
कं कनकलामूनिकिर्कानिमूरवसाहिर्न सत्रसुत्रगवच
नवात्रगकामिनिमनमाहिर्न वन्दनविं वचकारिर्न वगक
वयीनिसानिधि ससददददियसुकिरन॥ श्रीवात्रमलुगसु

नमः॥३॥मदनमहायतिवृत्तः(शर्वसूदायकं)रुकिहृदयकपाल
 माधवः(शक्तितावदनायकं)कमिकंविध्वंसनंशायतिश्रुतसा
 यकं(संगुष्ठचिह्नं)अनकलिला॥छीवात्रमल्लुसून्दरी॥१॥
 चठतवाल(गायाल)शेसूगदेयमद्वेयनाक्रमदरुतकिवि
 षदुत्रिरुत्रकृणं(निमिषश्चानयेनायलं)अतिसन्नुययत्रि
 प्रलुण्ठरुत्रिनवधकृयाकर्तृनिर्गुणियन०००न्दराद्यवय
 ॥छीवात्रमल्लुगसून्दरी॥२॥०००तिसमूखांशायवित्रचित्तं

वालमल्लुगसूर्यसमायुक्तं॥॥१॥०००नमगलयतीश्वराय॥
 गलयमिष्टुहन्त्राविष्टुनाञ्जनिनायकः॥देवीयूगमहागजा
 मरुवनयनाक्रमः॥१॥महादनामहाकायः॥चक्रदंष्ट्रगजानन
 (श्वेतवर्णमिरादीपि)सुनशागलनायकः॥२॥अकमालास्यद
 नश्च॥दक्षिणैकनसक्तिगयशुभादकयार्णववामदक्षवि
 धात्रि॥३॥नानायुष्यनमोदधानानार्गः॥धानुलधिर्गनागस
 क्रायंवीतसः॥नानाविधिविनाशनं॥४॥धवासुनमनश्चाना

लिता॥ अग्निनि आदित्या॥ मृगनित्र सामा॥ अष्टव अंगीत्र॥ रुक् वृध॥
 अनुनाथ वृहस्यति॥ उतत्रावाह पुक्॥ गरिषे गनिष्व॥ धननकणव
 वात्रवनायत्रातदाव आनन्दजागधाय दिनरिद रिदरका उयायन
 व॥ ॥ रुक् सूर्य वन्दमात्रादिनीव मोलरोमः सामद वध्ववृध॥ युरा
 जीवावेष्टवराज्वय चित्तुसोत्रिसिद्धियागञ्जसफ॥ धधनकणवा वात्र
 वानायत्रातदाव सिद्धिजागत्राकधाय गुरुकर्मयायदिनरीदर॥ न॥
 यजत्रविमनूत्राक्ष विश्वदवय्यसामय॥ गगरिकजीव॥ सूर्यदेवय
 पुक्॥ त्रविसूतमयिरुक् मृण्वागञ्जविर्न॥ ध्रुवथेथेनायत्रा

यः मृगनित्रसिद्धिः

अ. न. न. न.

2054

I

रुक्म वाविरुवन्दयूर

नदाव न कृत्वा वा नवा मृत्वा जातिनमस्ति ॥ अरु कर्ममतव कृदि
 नहना काज मसिधयुव ॥ ॥ १५ मरानु ४ साम विग उगवादा
 अरु मिज ४ यदयुगधन द्वाय उरुना रुहु जी गुत्र ४ अरु राज
 वयोयुक्ती अरु जन्म उदाहर ॥ रुप्रतिन दार आदिय वाच ॥ वि य
 साम ॥ उगवादा अंम ॥ धन द्वाय उरु रु हुनी वृह स्यति ॥ अरु
 गुह ॥ प्रवति गनिधन ॥ धन न दार वा वाच थ धन रात द्वाय अरु ज
 न्म धाय दिनमस्ति ॥ अरु कर्मन मतव गुरु काज वसयु सायन
 म सपरा ॥ वापार्क मूल संयुक्त यदा सामा चित्त क ॥ नारायणी विख्याता

काटिकल मूद्र न ॥

साना सशय वसुन मय मतव विवाहाद मतव विधवाशय
 मस्ति ॥ अरु जन्म धाय द्वितीया धनू मान व चतुर्थी वृष कुरु
 या ॥ मय क कट या यक्ष कन्या मिथून वास्वमी ॥ दशमी विष्णु के सि
 रु द्वा दशमी मृग गुल या ॥ एतां यति थिया दग्धा वर्जय सर्वक
 म् सु ४ द्वितीया धनू संग्रहि अमीन उरिद कर्म मतव द्वितीया
 यति सन दिन तिथा दग्धा ॥ चूथक वृष संग्रहि कुरु सनि
 मतव काज अरु मीन कन्या संग्रहि मीथून संग्रहि मतव का
 मय संग्रहि क कट संग्रहि न सिथि मतव काज ॥

म

ॐ॥ दसमीन, विष्णुसंग्रहसिंहसंग्रहनिमग्नवकाज॥ द
लिसिन, मकरसंग्रहनिगुलसंग्रहनिमग्नवकाज॥ ॥१॥
दशममहादिया, विष्णुसंग्रहसिंहसंग्रहनिमग्नवकाज॥ दशममहादिया
वृधमूलगुणीयका॥ गतविकगुनायसी, द्वितीयायादिनादिना
रुगु॥ सकमीसोपपायाटा, यमदक्षप्रकिर्तिता॥ दुजिसी, म
द्यनक्षत्रादितवात्र॥ विष्णुखनक्षत्र, नकादसी, सामवान
त्रात्र॥ दसमी, आदानक्षत्र, अंगनवात्र॥ गीनाखमूलनक्षत्र

वृधवात्र॥ सिथि, गतविकनक्षत्र, वृधस्यतिवात्र॥ दिवाय, यादि
नीनक्षत्र, रुगुवात्र॥ सकमीउगायाटा, गतिश्रुत्रवात्र॥ धन
तिथीनक्षत्र, उगायाटानावरातदाव, उमदक्षप्रकिर्तिता
रुगु, कर्ममग्नवकाज॥ ॥ मद्यमृगनिगुलसंग्रहनिमग्नवकाज॥
नूनाधया, नवतिनादिनायेव, उरुनाल्ययसुथा॥ नूना
निचविहयवेव, सर्वकार्यानि साधय॥ धननक्षत्र, सर्वाना
वात्रात्र, आदित्य, साम, वृध, वृधस्यति, रुगु, गतिश्रुत्र, धन

सविवाहानव यदयायतव चकर्मगतिरुकाङ्क्षाव
गङ्गाप्रदवयुतिसुदुर्लभतव धात्रदिनधायगुरुक
र्म ॥ ॥ ॥ दिनायातुतायाव वरमीसकमीस्थानवमीद
गमीव नानयूजायसादगमीधननयूजविय दनायति
नास्वसिधि सकमी नवमी दगमी गृथादसीन धन
यूजनवव तिथिधनमर्कतव ॥ ॥ ॥ अग्निनामेव प्रवर्षा
मृगमूलायूनवसू यष्य अक्षरुका यस्मान्दयमा

स्मृताः ॥ अग्निनामद्वय अन्याध नवत मृगजित मूल यूनव
सू यष्य अक्षरुका धननद्वयस गमनतव यस्मान्दयमा
वृध वृहस्यति अक्षरुका सतिद ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ नादिलीगदिवृवालि स्वाति विद्याचवात्रुली श्रवनाश्च
नक्षत्रि यस्मान्दयमा स्मृता ॥ ॥ ॥ नादिलीनद्वय पूर्व
रुद्र पूर्वविराट् पूर्वरात्रुन स्वाती विद्याचवात्रुली श्र
वन धनद्वय धननद्वय गमनमधम मरिद मया यष्यम

मखा नमनशुकातवर वात्र वृधे वृहस्यति शुक्रा ॥ १ ॥
द्विष्णवावाहना विनी मद्यादा रुतनी सथा अष्टुवा क
र्तिका (येव) प्रसूतनमत्र लक्ष्मी ॥ धनसंगममतावे विसा
रव उगारवार उगुरुली उगुरुद मद्य आदा रुतनी
वृत्तिक धनजागवनमतवद्वना मृष्टरुयशनिष्ठयन
अधमजाग वात्र आदिष्ट अंगन जनिष्ठयन सातामतव
इना ॥ ॥ नयूर्वगनिसामन नगुनादकिर्लरुव ॥ नय

अरुन ॥ शुक्रन नरुत्र वृधर्मगल ॥ जनिष्ठयन साम वहाय
मतव वृहस्यति यहायमजिवदकीन ॥ आदिष्ट अंगन
शुक्र याहायमतव वृध अंगन यहायमतव दिगुवि
प्राधकुरुलशयव जागानवन ॥ ॥ समुख अर्थगार
व दहिन धनसंयद ॥ वाम वंदरुव मृष्टरुय यन्दरु
यंमृष्ट ॥ यन्दरु समुखन जागवानसाधनलारुशय वव
प्राचकवानसाधनवृद्धि नारुशय रववसनायकावन

यामृग्य रुयश्च वल्यत्रिवनत्रायकं जाग वनसाधनं मृ
ग्यश्च रुयश्च वल्यत्रिवनत्रायकं जाग ॥ आनिक मा ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ प्रथम सुमहादर्व द्वितीयं च महेश्वरं ।
तृतीयं च कर्त्तृनाम चतुर्थं च वरध्वजं ॥ पंचमं कृत्ति
वासं च षष्ठमं कामदहनं । सप्तमं देवदेव शं नीलक
ण्ठं अष्टमं ॥ नवमं शं स्वर्नाम दशमं यावत्तत्पुत्रियं ॥
त्रयोदशमं कादशं नाम द्वादशं शिवसूक्तं ॥ अता निहाद

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
 सनाथा वृषली यतिः । मूच्यते सर्वं या यस्य शिवला
 कं संगच्छति । इति स्कन्दपुराणे गिरिद्वये दशानाम्
 संस्कारार्थम् ॥ अतः ॥ एता मुनिस्तमुनि धारणीयत्वं ता च कीर्त्या

सर्वकायसंस्कृत्य॥ दृष्ट्वा मनु॥ गुरु॥ विद्या नमः॥

ॐ नमः सनस्र ल्ये ॥ य धर्म सा न धी नाम द्वितीयं ३
सनस्रती ॥ गृताय सानदा ध्वी चतुर्थं हं स म मिनी ॥ यं
चर्मयुग विद्या ता ॥ वरुम वागा श्वनी तथा ॥ कोमाजी
सकर्म प्राक ॥ मरुम वक्रं चानी जी नवमं विदुषा माता
॥ दशमं वक्रं गसूता ॥ नृका दशं ध्रुवं वाणी ॥ द्वादशं व
नदाय का ॥ एता नि द्वादश नामानि ॥ यात नूत्न यय ४

य ॥ ०७ ॥ स वरुस्य शु रं रु यात् ॥ तस्या दवायु सा द तथा
ॐ नि सनस्र ती द्वादश नाम संसमा र्क ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥
सूर्याय ॥ आदि त्या रात्क य ४ सूर्या ॥ नृवि रानु दिः
वाकन ४ ॥ स्वर्गु प्र ता रग ४ यूया ॥ कृष्ण ४ ॥ सुसभा यदः
॥ एता नि द्वादश नामानि ॥ यात नूत्न यय ४ य ॥ ०८ ॥ न
त्य आयूरु वल की ॥ धर्वनी न विजाय न ॥ १ ॥ ॐ नि रु

च द्वादशनामं समाये ॥ गुरुमस्तु ॥ यागनयति नवाद्या ॥
 १॥ रामना जय माग्नीर्ल विद्या हत्वानां यात्रुवानां
 निनामलि। कोनवामानसुहात्रं वंदहंदायदीपाय
 ४॥ ॐ नमः यत्रिकाये ॥ वाल्मीकिमहर्षी दी। कोमान
 कोलाचनी। नकयसुयत्रिधानां सिंदूनात्रूलवि
 यहा ॥ बहुरुज्जागकिर्लु लंय। सिद्धिवागवधप्रभु

[illegible]